Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-3, Issue-2, Continuous Issue-18, March - April 2023

'शांति स्थापना में आधुनिक हिंदी काव्य की भूमिका '

सार :- 'शांति' और 'युद्ध' ऐसे दो विषय हैं, जिसमें 'शांति' सदैव सभी को स्वीकार्य है एवं 'युद्ध' सदैव त्याज्य है। 'शांति' मधुरता ,भाई-चारे , सद्भाव, सुखद जीवन और विकास की सीढ़ियां चढ़ने का एकमात्र आधार है। शांति व्यक्तिगत जीवन के लिए ही नहीं, मात्र समाज के लिए ही नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व और संपूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए अनिवार्य है। शांति ऐसा आंदोलन है जो युद्ध की समाप्ति और मानव हिंसा को रोकने तथा जीवन- शैली को सुचारू बनाने के लक्ष्य से जुड़ा होता है । शांति के विपरीत भावों को लेकर चलने वाला शब्द है- ' युद्ध' युद्ध को रण, संग्राम ,समर ,जंग आदि नामों से जाना जाता है । युद्ध को किसी निश्चित परिभाषा में सीमित करना अत्यंत कठिन है क्योंकि युद्ध स्वयं में ही अत्यंत जटिल घटना है, जो संपूर्ण मानव जाति , धर्म एवं संस्कृति को भी नष्ट कर देती है।पीछे रह जाते हैं मात्र विनाश के अवशेष ।

बीज शब्द :- शांति, युद्ध, स्थापना ,मानवता, विभीषिका, भारतीयता

भारत सदैव शांति का पक्षधर रहा है । इतिहास गवाह है कि इसने कभी भी विस्तारवादी नीति के लिए किसी दूसरे देश पर आक्रमण कर उनकी स्वतंत्रता और उनकी शांति भंग करने का प्रयास नहीं किया । यह ' जिओ और जीने दो ' की नीति का समर्थक है इसीलिए इसे विश्व -गुरु की संज्ञा दी जाती रही है। यह सत्य, शांति और अहिंसा का उद्गम स्थल है। यहां जन्मे महापुरुषों - बुद्ध ,गाँधी , टैगोर आदि सभी का सिद्धांत जन-कल्याण और विश्व कल्याण की कामना रहा है। इन महापुरुषों ने केवल कामना ही नहीं की अपितु अपना संपूर्ण जीवन इसी कामना की स्थापना में लगा दिया।

शांति स्थापना के लिए केवल महापुरुष ही योगदान नहीं देते अपितु साहित्यकार भी निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं । ये प्रयत्नशील साहित्यकार युद्धपरक साहित्य की रचना करते हैं । उनके युद्धपरक लेखन के मूल में भी शांति की कामना ही होती है । हिंदी के अनेक साहित्यकारों ने अपने काव्य में युद्ध और शांति दोनों को ही स्थान दिया है। । उन्होंने जहां एक ओर युद्ध के कारण , समस्याओं और युद्धोपरांत की विभीषिकाओं का वर्णन किया वहीं दूसरी ओर जीवन मूल्यों की स्थापना के लिए और मानवता को बचाने के लिए उन्होंने अपने काव्य में शांतिपरक भावनाओं और विचारों को समाहित किया । युद्धपरक काव्य लिखते हुए भी उनका मूल उद्देश्य सदैव शांति की स्थापना तथा मानवता को सुरक्षित रखना ही रहा है ।

आदिकालीन साहित्य से वर्तमान आधुनिक काल तक अनेक कवियों ने युद्धपरक रचनाएं लिखीं जैसे- रामायण , महाभारत , रासो काव्य , कवि भूषण का वीरता पूर्ण काव्य , कुरुक्षेत्र , परशुराम की प्रतीक्षा , अंधा युग , राम की शक्ति पूजा , संशय की एक रात , एक कंठ विषपायी आदि इन सभी काव्य- रचनाओं में स्पष्ट किया गया है स्वेच्छा से युद्ध कोई नहीं चाहता । युद्ध निंदित और क्रूर कर्म है । यह मनुष्य की सारी समस्याओं की जड़ है। साथ ही साथ इन काव्यों में मानवता और शांति संबंधी भावनाओं के संरक्षण का भी पूर्ण प्रयास किया गया है । हमारी पौराणिक और ऐतिहासिक रचनाएं भी इस सत्य की साक्षी हैं कि हमने कभी किसी की स्वतंत्रता का हनन नहीं किया , किसी की शांति भंग करने की चेष्टा नहीं की और न ही किसी के अधिकारों का हरण किया । लेकिन साथ ही इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि हम अकर्मण्य , पलायनवादी या कायर हैं । भागवत गीता के तीसरे अध्याय में श्री कृष्ण ने कर्म का संदेश देकर सभी को कर्म की ओर प्रवृत्त किया । महाभारत में पांडवों ने शांति बनाए रखने और युद्ध को रोकने का हर संभव प्रयास किया । श्री कृष्ण का शांति दूत बनकर कौरव- सभा में संधि प्रस्ताव के लिए जाना , हमारी शांतिप्रियता का श्रेष्ठ उदाहरण है । मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने पिता के वचन को पूर्ण करने के लिए राजसत्ता को त्याग वनवासी जीवन स्वीकार किया । मानवता की स्थापना के लिए एवं राक्षसी शक्तियों से मानव जाति की रक्षा के लिए रावण तथा अन्य राक्षसी शक्तियों से युद्ध कर विजय प्राप्त की लेकिन लंका का राज्य स्वयं ग्रहण ना कर रावण के भाई और लंका के ही राजघराने के सदस्य विभीषण को सौंप दिया ।

जब जब मानव जाति पर युद्ध रूपी संकट के बादल मंडराने से मानवता घायल होने लगती है , तब- तब दूसरे पक्ष को भी अपनी घायल मानवता की रक्षा के लिए अस्त्र उठाना पड़ता है । हमारी भारतीय संस्कृति हमें कभी भी दूसरों के अधिकारों के हनन या मानव- जाति के विनाश की आज्ञा नहीं देती । किंतु साथ ही हमारी संस्कृति , हमारे संस्कार हमें यह भी आज्ञा नहीं देते कि अगर कोई शत्रु हमारे क्षेत्र का अतिक्रमण और हमारे अधिकारों

का हनन कर रहा हो या वह मानव जाति के विनाश का कारण बन रहा हो तो हम अहिंसा का सहारा ले या उसके सामने शांति का राग अलापें । उस समय हमारा केवल एक ही कर्तव्य होता है कि हम उस हाथ को ही जड़ से उखाड़ फेंके जो हमारी तरफ बढ़ रहा हो । रामधारी सिंह दिनकर 'कुरुक्षेत्र ' में कहते हैं-

छीनता हो स्वत्व और तू ,
त्याग तप से काम ले , यह पाप है ,
पुण्य है विछिन्न कर देना उसे ,
बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ है । 1

सही- गलत ,पाप -पुण्य , धर्म- अधर्म यह विरोधी भावों के शब्द- युग्म हैं जिन्हे हम लकीर खींच कर अलग-अलग नहीं बाँट सकते । वास्तव में ये शब्द संदर्भ और स्थितियों पर निर्भर शब्द हैं , जो कभी हमारे लिए साध्य और कभी साधन बन जाते हैं । जीवन में शांति और मूल्यों से जुड़े आदर्शों का चित्रण करना कवि का अभीष्ट होता है उनके काव्य का मेरुदंड होता है । साहित्यकार सदैव चाहता है कि उसके अपने देश में ही नहीं संपूर्ण विश्व में शांति की स्थापना और विश्व बंधुत्व का भाव रहे । इसीलिए ठाकुर गोपालशरण सिंह कहते हैं-

- " सुख शांतिमय संसार हो ,
पशु शक्ति का न प्रयोग हो ,
सद्भाव का उपयोग हो ,
सब में सदा सहयोग हो । " 2

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त श्रीराम के अनन्य भक्त थे वे श्री राम को अपना आराध्य मानते थे उन्होंने साकेत नामक अपने महाकाव्य में श्री राम को केंद्रीय पात्र के रूप में चित्रित किया है । उनके राम तुलसी के राम नहीं है । गुप्तजी ने युग -सापेक्ष दृष्टि से श्रीराम का चित्रण किया है । वे अवतारी पुरुष न होकर युगपुरुष है जो भारतीय जनमानस को सुख-शांति का मात्र संदेश ही नहीं देते , वे उन्हें कर्म की ओर अग्रसर करते हुए कहते हैं -

"संदेश यहां मैं नहीं स्वर्ग का लाया ,
इस भूतल को स्वर्ग बनाने आया ।" 3

गुप्तजी भारतवासियों को जागृत कर कर्म की ओर अग्रसर करना चाहते हैं । वे स्पष्ट करते हैं कि आज केवल संदेश देने या दूसरों को उपदेश देने से कार्य की सिद्धि नहीं होगी । हमें स्वयं कार्य करना होगा , कर्म प्रधानता से ही हम भूतल को स्वर्ग के समान सुंदर बना सकते हैं ।

गुप्त जी का संपूर्ण जीवन गांधी जी से प्रभावित था । वर्तमान समय में भी उनके काव्य की प्रासंगिकता अक्षुण्य है । आज के समय में हम सभी में विविधताएं होते हुए भी हमारी भारतीयता , हमारे संस्कार , नैतिकता तथा मानवीयता सबको आपस में जोड़े हुए हैं । गुप्त जी की रचना ' भारत- भारती ' आज भी हमारा पथ- प्रदर्शन कर रही है । समाज में व्याप्त विरोधाभास और अशांति को दूर करने के लिए इनकी रचनाओं से प्रेरणा लेनी चाहिए । मैथिलीशरण गुप्त जी की अधिकांश रचनाएं दो विश्व युद्धों के बीच लिखी गई हैं । इस कारण युद्ध का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव एवं कवि की चिंता सब काव्य के संवेदन- पक्ष को प्रभावित करते हैं । गुप्त जी का मानना है कि " मनुष्य को अपना मिथ्यादर्प छोड़कर देश , कुल ,जाति अथवा वर्ग पर आधारित भेदभाव का विसर्जन कर देना चाहिए , जिससे कि-" विकास भावना" का उदय हो और भविष्य में युद्ध रहित मानव संस्कृति का उदय हो। " 4

वास्तव में विचार करने के बाद स्पष्ट होता है कि भविष्य की यही युद्ध- रहित उज्जवल मानव संस्कृति विश्व शांति की स्थापना में अहम भूमिका का निर्वाह करेगी । रामधारी सिंह ' दिनकर' राष्ट्र -भावना से ओतप्रोत राग और आग के कवि माने जाते हैं । उन्होंने समय की मांग के अनुसार अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए ' कुरुक्षेत्र' नामक काव्य की रचना की । इनकी इस रचना में महाभारत -युद्ध के उपरांत युधिष्ठिर के मन में उठने वाले प्रश्नों को कवि ने पितामह भीष्म और युधिष्ठिर के संवादों के माध्यम से समाज , देश और विश्व के समक्ष रखा है । क्योंकि युद्ध एक भयंकर और घातक समस्या है जिससे सारा विश्व त्रस्त है । इनकी यह रचना महाभारत युद्ध पर आधारित होते हुए भी मात्र कौरव- पांडवों का युद्ध या उनकी युद्ध जनित समस्याओं का आईना मात्र नहीं है । अपितु यह रचना समसामयिक युग में भी युद्ध की समस्याओं से जुड़ी कवि की चिंता को स्वर प्रदान करने वाली अति प्रासंगिक रचना है । 'कुरुक्षेत्र' नामक इस रचना में युधिष्ठिर द्वारा

युद्धोपरांत भीष्म से पूछे गए प्रश्न मानवता के लिए चिंतित व्यक्ति के प्रश्न हैं । कुरुक्षेत्र के तृतीय सर्ग में कवि दिनकर जी कहते हैं -

"शांति नहीं तब तक, जब तक ,

सुख भाग न नर का सम हो ,
नहीं किसी को अधिक हो ,
नहीं किसी को कम हो । "5
भीष्म पितामह युधिष्ठिर को समझाते हुए कहते हैं कि मैं भी चाहता हूँ कि इस धरती पर सर्वत्र करुणा , प्रेम और अहिंसा का साम्राज्य हो ,और मनुष्य के हृदय से ईर्ष्या , द्वेष ,लोभ का विष सदा के लिए विदा हो जाए । आपसी प्रेमभाव की धारा व्यक्ति के हृदय को भिगो दे और एक -दूसरे के मन में प्रेम के बीज बो दे । वे आगे कहते हैं कि- मेरी यह जो भावनाएं हैं वे केवल मेरे मन की भावना नहीं हैं संपूर्ण मानव -मन की यही इच्छा है । किंतु लगता है कि शांति की कामना आकाश- कुसुम के समान केवल आकर्षित करती है क्योंकि इस धरती पर युधिष्ठिर की तरह शांति की कामना करने वाले बहुत कम है और सुयोधन की सी मनोवृति वाले बहुत अधिक हैं ।
" क्योंकि युधिष्ठिर एक-सुयोधन ,
अगणित अभी यहां हैं ,
बढ़े शांत की लता कहो ,
वे पोषक द्रव्य कहां है ।" 6
कवि दिनकर का मानना है कि स्थायी शांति की स्थापना श्रद्धा ,भक्ति ,प्रेम विश्वास के द्वारा व्यक्ति के हृदय पर राज करती है , शरीर पर नहीं । दिनकर जी न्याय को शांति की प्रथम सीढ़ी मानते हैं । उनका मानना है कि यदि सबके लिए समान व्यवस्था की नींव मजबूत नहीं होगी तो शांति का महल कभी भी सुदृढ़ नहीं होगा , वह कभी भी भरभरा कर गिर जाएगा । अपनी रचना के द्वारा कवि दिनकर मानव जाति को सचेत करते हुए कहते हैं कि शांति की स्थापना कभी भी खड्ग के भय से स्थापित नहीं की जा सकती -
" शांति नाम उस रुचित सरणी का ,
जिसे प्रेम पहचाने,
खड्ग- भीत तन ही न,
मनुष्य का मन भी जिसको माने। "7
कवि दिनकर का कथन शत प्रतिशत सही है क्योंकि शांति कोई बाहरी आवरण नहीं है इसके लिए दिखावा नहीं किया जा सकता है । मैथिलीशरण गुप्त और रामधारी सिंह दिनकर के अतिरिक्त आधुनिक हिंदी काव्य में सियारामशरण गुप्त (आत्मात्सर्ग) ,धर्मवीर भारती (अंधा युग) , नरेश मेहता(संशय की एक रात) , दुष्यंत कुमार (एक कंठ विषपायी) आज सभी कवि अपने -अपने काव्यों द्वारा देश और विश्व में शांति की स्थापना का प्रयास करते हुए युद्ध को अस्वीकार करते हैं ।
नरेश मेहता द्वारा लिखित ' संशय की एक रात ' नामक रचना में अनादि काल से चली आ रही 'युद्ध' और 'शांति' के द्वंद्व की समस्या को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है । इसमें कवि ने राम -रावण युद्ध की घटना को अपने काव्य का आधार बनाया है । श्री राम भारतीय संस्कृत के नायक हैं वे मर्यादा पुरुषोत्तम शील , शक्ति और सौंदर्य के पुंज हैं , संवेदनशील बुद्धिमान और प्रजावान पुरुष है जिस कार्य में जन समूह का हित -अहित जुड़ा हो उसके लिए वे चिंतन- मनन करते हैं साथ ही अपनी मंत्रिपरिषद से सलाह मशविरा करते हैं सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों पर विचार- विमर्श करते हैं ताकि जब भी किसी निर्णय पर पहुंचे तो लिए गए निर्णय के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प शेष न रहे ।
इस रचना में कवि नरेश मेहता श्री राम की द्वंद्वात्मक मनोस्थिति का चित्रण करते हैं ।
उनके मन में युद्ध और शांति को लेकर संशय की स्थिति है । वे सोचते हैं कि क्या युद्ध अनिवार्य है क्या शांति की समस्या का समाधान संभव नहीं ? राम के मन का यह संशय वास्तव में एक सजग , सचेत राजनेता का- युद्ध और शांति के पक्ष -विपक्ष का या दो विपरीत ध्रुवों का संघर्ष है । श्री राम चिंतित हैं और सोचते हैं कि व्यक्तिगत समस्या(रावण से सीता की मुक्ति) के समाधान के लिए पूरे समाज को युद्ध की अग्नि में धकेलना कहां तक सत्य है? वे समष्टि को युद्ध से बचाना चाहते हैं । वे मानते हैं कि युद्ध कितना भी आवश्यक क्यों ना हो किंतु वह सदैव विनाशकारी ही होता है । कवि नरेश मेहता श्रीराम के माध्यम से समाज में सत्य की प्रतिष्ठा चाहते हैं । वे कहते हैं-
" मैं सत्य चाहता हूं युद्ध से नहीं
खड्ग से भी नहीं
मानव का मानव से सत्य चाहता हूँ । " 8
श्रीराम आगे कहते हैं कि -
" मानव के रक्त पर पग धरती आती
सीता भी नहीं चाहिए। " 9

कवि नरेश मेहता श्री राम के द्वारा संपूर्ण विश्व के समक्ष युद्ध और शांति की समस्या प्रस्तुत कर युद्ध की सार्थकता पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं और शांति-स्थापना के द्वारा मानवीय-मूल्यों को बचाए रखना अपना लक्ष्य मानते हैं । राम कहते हैं-

" मैं केवल युद्ध को ही बचाना
चाहता हूँ बंधु !
मानव में श्रेष्ठ जो विराजा है ,
उसको ही
हाँ उसको ही जगाना , चाह रहा हूं -बंधु!
.....
मैं नहीं हूँ कापुरुष
युद्ध मेरी नहीं है कुंठा
पर युद्ध प्रिय भी नहीं । " 10

सच्चाई यह है कि 'युद्ध 'कभी भी स्वयं नहीं होते । शासक -वर्ग इसे कभी अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए ,कभी शक्ति प्रदर्शन के लिए तो कभी प्रतिशोध के वशीभूत हो युद्ध को आमंत्रित करते हैं । कवि दुष्यंत कुमार ने भी अपनी रचना 'एक कंठ विषपायी ' में 'युद्ध और शांति ' की इस समस्या को उठाया है सती के पिता प्रजापति दक्ष शिव से अपने अपमान का बदला लेने के लिए और देवलोक में शिव की प्रतिष्ठा को खंडित करने के लिए एक विशाल यज्ञ का आयोजन करते हैं । वास्तव में प्रजापति दक्ष यज्ञ का नहीं यज्ञ के रूप में युद्ध को ही आमंत्रित करते हैं । यज्ञ - स्थल पर अपने पति महादेव शिव की अवहेलना देख सती यज्ञ स्थल पर ही आत्मदाह कर लेती हैं मोहासक्त शिव सती के आधे जले शव को कंधे पर डालकर युद्ध की घोषणा कर देते हैं । कवि दुष्यंत कुमार युद्ध के पक्षधर नहीं हैं वे युद्ध को संपूर्ण मानव जाति के लिए अहितकर और हानिकारक मानते हैं । युद्ध को सामूहिक आत्मघात मानते हैं यही कारण है जब वरुण , इंद्र तथा अन्य सैनिक ब्रह्मा से शिव को रोकने के लिए युद्ध की आज्ञा मांगते हैं तो ब्रह्मा कहते हैं कि -

" यदि मुझसे करो अपेक्षा
तो मैं अपने मुँह से
सेना को आदेश नहीं दे सकता
यह सामूहिक आत्मघात है ।
.....
दृष्टि के बिना अकारण युद्ध ना ठानें
युद्ध अधिक से अधिक एक कारण है
उसको सत्य न मानें
प्राणों की आहुति
युद्ध के लिए नहीं
सत्य के लिए होती है । " 11

वास्तव में सत्य, अहिंसा , प्रेम ,एकता ,सद्भाव ,मानवता आदि यह सब मिलकर ही शांति- स्थापना में सहायक हो सकते हैं । अगर हम विश्व में शांति स्थापित करना चाहते हैं तो हमें इन गुणों को स्वीकार करना ही होगा ।

संक्षेप में कहें तो शांति निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके लिए मानव सदा से प्रयासरत रहा है और उसे आगे भी सजग रहना होगा , क्योंकि आज हम युद्ध और शांति के ऐसे दोराहे पर खड़े हैं जहां तीसरा विश्व युद्ध अंगुली भर की दूरी पर है किंतु भारत जैसे तटस्थ युद्ध विरोधी मानसिकता और शांति के समर्थक देश इस ज्वालामुखी विस्फोट को रोक रहे हैं । हमें ज्ञात है कि आज के दौर में शांति बनाए रखना अति आवश्यक है । जब तक शांति- स्थापना नहीं होगी, मानव जीवन - सुगम तथा कोई भी देश उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो सकेगा । विश्व -शांति -स्थापना के लिए कवि ,विचारक , राजनेता , समाजसेवी , सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाएं , संयुक्त राष्ट्र संघ सभी अपने -अपने स्तर पर प्रयासरत हैं । संयुक्त राष्ट्र संघ 2002 से प्रत्येक वर्ष 21 सितंबर को विश्व शांति दिवस के रूप में मनाता है।

अंत में यूनेस्को के संविधान में कहा गया है -" युद्ध व्यक्ति के मन से शुरू होता है इसीलिए शांति के दुर्ग व्यक्ति के मन ही बनाए जाने चाहिए । "12

संदर्भ-

1. कुरुक्षेत्र : (द्वितीय सर्ग) रामधारी सिंह दिनकर पृ०21

2. विश्व गीत : ठाकुर गोपाल शरण सिंह, पृ०109
3. साकेत : (अष्टम सर्ग)मैथिलीशरण गुप्त पृ०235
4. मैथिलीशरण गुप्त का काव्य : सांस्कृतिक चेतना , ममता रानी पब्लिशर
5. कुरुक्षेत्र : (तृतीय सर्ग) रामधारी सिंह दिनकर पृ०28
6कुरुक्षेत्र : (तृतीय सर्ग) रामधारी सिंह दिनकर पृ०35
7कुरुक्षेत्र : (तृतीय सर्ग) रामधारी सिंह दिनकर पृ०35
8. संशय की एक रात : नरेश मेहता
9.संशय की एक रात : नरेश मेहता
10.संशय की एक रात : नरेश मेहता
11. एक कंठ विषपायी : दुष्यंत कुमार पृ०114-115
12. टैगोर और गांधी : क्या वे शांति के लिए वर्तमान में प्रासंगिक हैं ?अपसला विश्वविद्यालय में दिए भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के व्याख्यान से-

---

डॉ0 पूनम राठी
एसोसिएट प्रोफेसर
भगिनी निवेदिता कॉलेज
दिल्ली -विश्वविद्यालय , दिल्ली
Mobile no. – 9810810641
Email id- bncpoonam@gmail.com